मासिक
Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख पूर्ण अंक २१७ अंक अगस्त-२०२५
Volume no. 18, Issue No. 217 August 2025

गुरुपूर्णिमा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

विल्सडेन - लंडन (यु.के.) मंदिर के स्वर्ण जयंती महोत्सव पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के दर्शन ।

बद्रीनाथ अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा की विधि पूर्ण करते तथा मंदिर का विधिवत उद्घाटन और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २१७ ● अगस्त-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री	०६
०४.	गुरु पूर्णिमा संदेश-२०२५	०७
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१३
०६.	भक्ति सुधा	१४
०७.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में	१८
०८.	सत्संग समाचार	१९

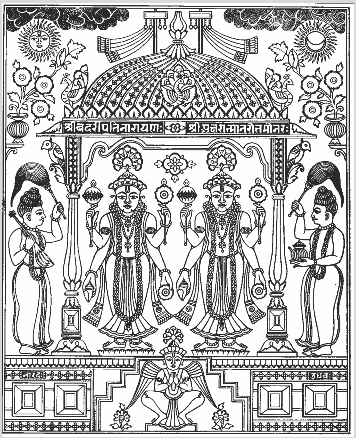

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

अपने मंदिर में सुंदर हीरे का झूला दिव्य दर्शन सभी को आनंद दे रहा है।

इस चातुर्मास में विशेष नियम रखकर भजन करना चाहिए । महाराज ने हम सभी को कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए । उसके बारे में अच्छी से भी अच्छी बात शिक्षापत्री में लिखकर दिये है । उनकी आज्ञा-उपासना में कोई परिवर्तन नही करे तो उसका जीवन सार्थक हो जाता है । जीव का कल्याण होने में शेष नही रह जाता है ।

पूरा संसार अध्यात्म के लिये शास्त्रो का अध्ययन करता है । लेकिन अपने महाराजश्रीने सभी शास्त्रो का सार शिक्षापत्री में दिये है । प्रतिदिन उसका पाठ करके व्यवहार करने की आज्ञा दिये है । इस शिक्षापत्री को लिखे २०० वर्ष हो चुका है । तो भी आज के दिन यह आज्ञा ये प्रस्तुत है । और हजारो वर्ष के बाद भी प्रत्येक जीव के कल्याण के लिये अमोघ शस्त्र बना रहेगा । कारण..... यह स्वयं भगवान की वाणी है ।

आगामी वसंत पंचमी को अपने शिक्षापत्री का २०० वर्ष का द्विशताब्दी महोत्सव की ''समैया'' मनाने के लिये कटिबद्ध है । ''समैया'' में योगदान देकर शिक्षापत्री के प्रति आत्मियता रखना है । शिक्षापत्री मेरी है । मैं शिक्षापत्री का पालक-उपासक हूँ । ऐसी भावना पैदा करना है ।

अपने आचार्य महाराजश्री भी को देखे तो देश-विदेश के कितने मंदिरो की व्यवस्था दौड-दौडकर करते है । गुरु पूर्णिमा का उत्सव पूरा करके दूसरे दिन लंदन विल्सडन मंदिर के ५० वे वर्ष के उत्सव (नव दिन का था) में हाजिरी देने गये थे । सभी का आग्रह रहता है कि महाराजश्री हमारे प्रसंग पर उपस्थित रहे । अभी सत्संग का विस्तार अधिक हो गया है । आप सभी की श्रीजी महाराज के प्रति दृढ निष्ठा रखकर भजन करे । अपने मंदिरो का देश-विदेश में अधिक विस्तार हुआ है । महाराज इस लोक में तथा परलोक में सुखी रखेगे ।

समैया के उपलक्ष्य में पर्यावरण के भाग रुप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा तुलसी के पौधे-कुंडे और हजारो नीमके पौधे का वितरण किया है । प्रत्येक भक्त उसकी रक्षा और जतन करे । प्रत्येक हरिभक्त परिवार को एक पौधा लगाकर पेड बन जाये तब तक उसका पालन-पोषण करना चाहिए ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

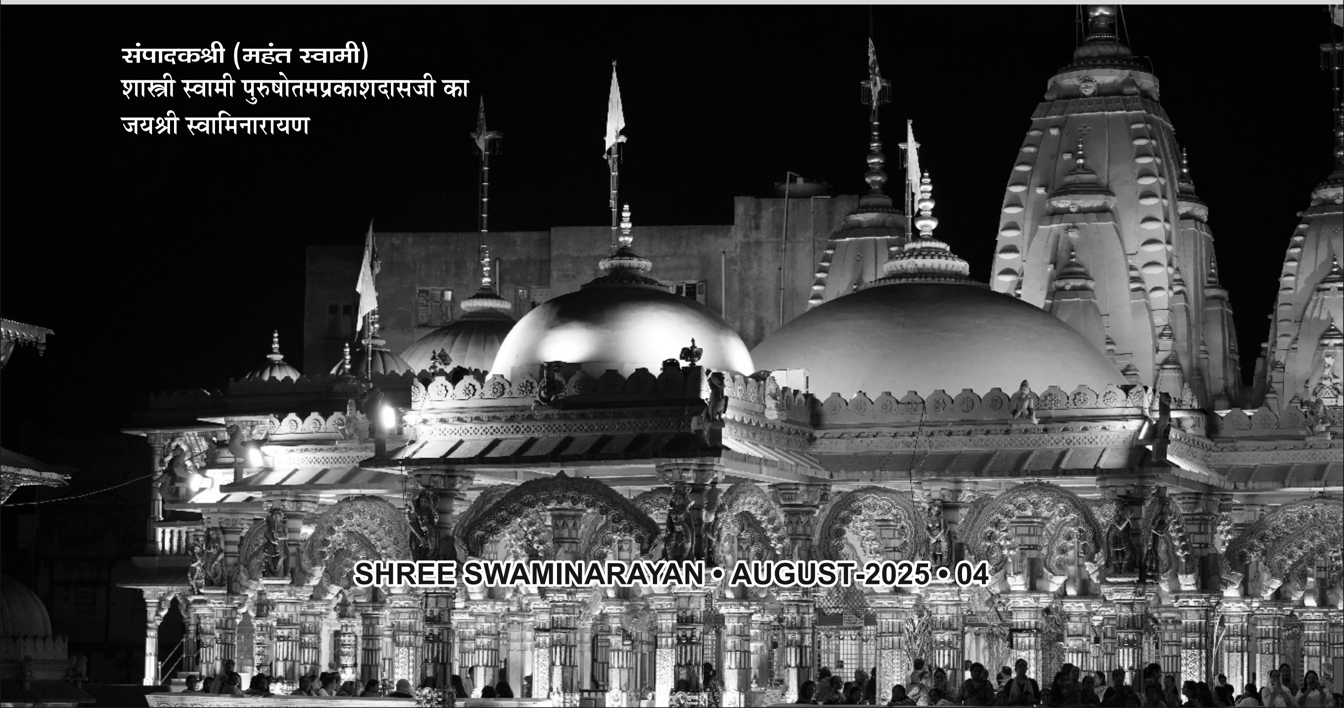

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

(जुलाई-२०२५)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में समैया के उपलक्ष्य में अपने करकमलो द्वारा तुलसी के कुंडा का वितरण करना।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में संत-हरिभक्तो द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्व के अवसर पर पूजन-अर्चन, रात्रि में लंदन जाना।

११से१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडन लंदन स्वर्ण जयंती पाटोत्सव महोत्सव स्वयं की सानिध्य में मनाना।

२१ असारवा श्री स्वामिनारायण वाडी गुरुकुल श्री शिवलिंग की प्राणप्रतिष्ठा अपने करकमलो से पूर्ण करना।

२९-३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रीनाथधाम पुन मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०२५)

१से४ पेन्सववेनिया (अमेरिका) अपने शुभ सानिध्य में (एन.एन.डी.वाय.) युवा कैम्प में जोडना।

५ फ्लोरिका (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव अपने करकमलो द्वारा पूर्ण करना।

६-१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन लंदन स्वर्ण जयंती महोत्सव पर पधारना।

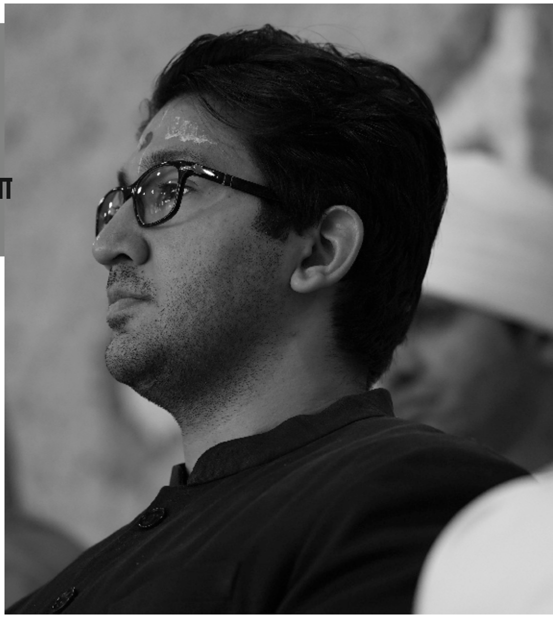

श्री स्वामिनारायण

समैयो के उपलक्ष्य में ॥ शिक्षापत्री ॥

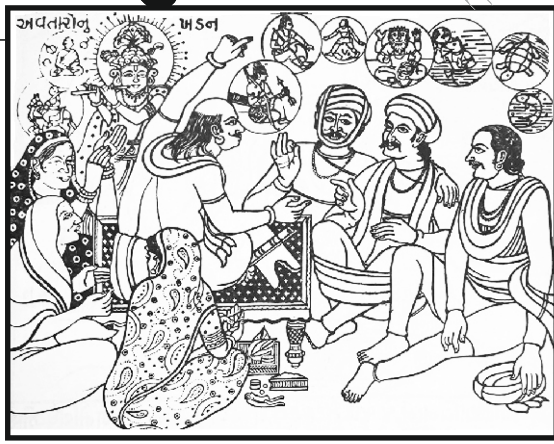

कृष्णकृष्णावताराणां खण्डनं यत्र युक्तिभिः । कृतं स्यात्तातानिशास्त्राणि न मान्यानि कदाचन ॥२९॥

अनुवाद : जिस शास्त्र के विषय में श्रीकृष्ण भगवान तथा कृष्ण भगवान के जो वाराह आदि अवतार का युक्ति करके खण्डन किया गया हो । ऐसे शास्त्र को कभी न माने और नही सुने भी ॥२९॥

विवेचना श्री कृष्ण जो परब्रह्म है । सभी का कारण होते हुए भी स्वंय अकारण है । उनका तथा अनेक अवतार धर्म हित के लिये हुए । उनके युक्ति प्रयुक्ति का जो असत्य करके खंडन किया गया है । वह शास्त्र के प्रमाण से कभी मानना नही चाहिए ।

''श्रीकृष्ण ईश्वर नही है'' इनके अवतारो में हमे श्रद्धा नही है । आदि बोलने वाले अज्ञानी लोगो को यदि उत्साह और प्रेम से समझा दे तो वे अज्ञान से मुक्त हो जाते है । और श्रद्धा वाले हो जाते है । लेकिन चार्वाक जैसे सिद्धान्त वाले लोग संसार को ईश्वर हीन मानते है ।''असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्'' यह उनके मत है । अहंत लोगो के मतानुसार इस संसार की उत्पत्ति कर्म से होती है । पुरुष के संसर्ग से नैसर्गिक त्रिविध परिणित रुप वाला की इस जगत को ईश्वर से अपेक्षा नही है । ऐसा कपिल सांख्यवाले कहते है । ये लोग ही युक्तियों द्वारा श्रीकृष्ण के परब्रह्मत्व तथा अवतारो को आज्ञा को शंका में रख देते है । इसी प्रकार दूसरे नास्तिकतावाले भी होते है । इन सभी को ईश्वर खंडन करने वालो को तथा उनके शास्त्रो का अध्ययन करने से अपनी बुद्धि संस्कार विहीन हो जाती है ।

कई मत तो ऐसे है जैसे पाशुपत कहते है कि सर्वेश्वर परब्रह्म दूसरा कोई है । श्रीकृष्ण नही ऐसे ये लोग कहते है ।

''हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे'' अथवा 'प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत अथवा ''विश्वाधिको रुद्रो महर्षिः'' इत्यादि रुद्र को ईश्वर बताते है । लेकिन यह मत ठीक नही है । भगवान बादरायणने इनका खंडन किया है ।

श्रीकृष्ण परमात्मा का परमतत्व निम्न लिखित श्रुति से स्पष्टहोता है ।

''नारायणपरा वेदाः'' ''वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः'' ''वासुदेबपरा वेदाः'' । ''एको ह वै नारायण आसीत् न ब्रह्मा नेशानः । तथा

''कृष्ण एव हि लोकानामुत्पत्तिरपि चाव्ययः ।''

''कृष्णास्य हि कृते भूतमिदं विश्वं चराचरम् ॥''

इस प्रकार श्रीकृष्ण ही सर्वेश्वर परब्रह्म है। यह तय होता है । श्रुति स्मृति में सर्व जगत कारण के रुप में श्रीकृष्ण परमात्मा ही दिखायी देते है।

एक पक्ष ऐसा मानता है कि परब्रह्म निर्गुण है। जैसे कि ''निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं निरञ्जनम्,'' ''साक्षी केवलो निर्गुणः'' अशब्दम् अस्पर्शम् अरुपम् ।'' लेकिन यह मत अमान्य है। गुण निषेधपरक क्न तो प्राकृत्ति और हेयगुणवाला है। शरीर निषेधपरक वचन भी प्राकृत शरीर परक है। भगवान कृष्ण के गुण सद्भाव में या आप्राकृत शरीर सद्भाव में कोई विरोध नही है । 'आकाश शरीरं ब्रह्म' ऐसा कहे है। इससे अदश का निराकार होना सिद्ध होता है। ऐसा नही मानना है क्योकि आकाश है। अर्थात् आसमान्नात काराते अर्थात जो चारो तरफ शोभित अर्थात् प्रकाश युक्त शरीरवाले ब्रह्म है।

जहाँ पर अवतारो का खंडन हो वह वर्जित ग्रंथ है। ''कभी ईश्वर अवतार नही लेता'' अवतार भी मायिक स्वरुप में लेते है'' ऐसे विधान (तर्क) अनादर के पात्र माने जाते है। क्योकि परब्रह्म स्वेच्छा से सर्वातारी रुप में अवतरित होते है कहा गया है –

''अजायमानो बहुधा विजायते।''

''तदात्मानं सृजाम्यहम्।''

''भगवानीश आत्मानं सृजते हरिः इत्यादि

जो अवतारो की अवज्ञा करते है। ये आसुरी योनि वाले लोग होते है। गीता में कहा गया है।

अवजानन्ति मांमूढा मानषीं तनुमाश्रितम्...

राक्षसीमासुरी चैव प्रकृति मोहिनी श्रिताः ॥

इसलिये श्रीकृष्ण का परब्रह्म सकल कल्याण गुणवाला, करने वाला, विग्रहतत्व प्रतिपादक जो शास्त्र तथा जो श्रीकृष्ण के अवतारो के उद्देश्य प्रयत्न, सकल कल्याणवाले गुण, विग्रहतत्व का प्रतिपादन करते है । वही शास्त्र श्रीहरि के आश्रितो के लिये मान्य है। शेष नही है।

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

श्रावण वद-१३ ता. २१-८-२०२५ गुरुवार श्रीहरि बालमुकुंदजी को झूले से उतारना।

श्रावण वद-३० ता. २३-८-२०२५ शनिवार शिव पूजन समाप्त, कुशग्रहणी अमावस्या।

भाद्र सुद-३ ता. २६-८-२०२५ मंगलवार केवडा त्रीज।

भाद्र सुद-४ ता. २७-८-२०२५ बुधवार श्री गणेश चतुर्थी।

भाद्र सुद-५ ता. २८-८-२०२५ गुरुवार ऋषि पंचमी।

भाद्र सुद-८ ता. ३१-८-२०२५ बुधवार को जलझीलनी एकादशी, श्री गणपतिजी का वरघोडा दोपहर १२-००

भाद्र सुद-१२ ता. ४-९-२०२५ गुरुवार वामन जयंती दोहपहर १२ बजे आरती।

भाद्र सुद-१५ ता. ७-९-२०२५ रविवार मुकुटोत्सव पूनम चन्द्र ग्रहण भारत में दिखाई देगा । उसका पालन करे।

ग्रहण भेद दोपहर – १२.५७ मिनट पर

ग्रहण स्पर्श रात्रि ९-५७ तक

ग्रहण मोक्ष रात्रि १-२६ मिनट तक

भाद्र वद-११ ता. १७-९-२०२५ बुधवार इंदिरा एकादशी।

भाद्र वद-३० ता. २१-९-२०२५ रविवार को दर्श अमावस्या (सूर्यग्रहण भारत में नही दिखाई देगा जिसका पालन नही करना है।

गुरु पूर्णिमा संदेश-२०२५

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. आचार्य महाराजश्री, कालुपुर मंदिर, अषाढ सुद-१५ गुरुपूर्णिमा के पावन अवतर पर ता. १०-०७-२०२५ : नरनारायणदेव के सानिध्य में चरणो में बैठकर हम सभी भाग्यशाली है। हम लोग यहाँ पर उत्सव समैया कर रहे है। अभी संतो ने बात की, मेरा नम्र निवेदन है। अधिक सुनने को मिलता है। महाराजश्री के आज्ञा में रहना तो हमने कौन सी आज्ञा दिये है ? आप सभी बैठे है, कोई मुझे बताये कि मैने आज्ञा की है। चले खडे होकर कोई संत या हरिभक्त कहे कि हमने आज्ञा दी है । २१२ श्लोक शिक्षापत्री में लिखा गया है। देश-विभाग के लेख है । सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र है । इसमें दी गई आज्ञा का पालन हम सभी को करना है। मेरी कोई आज्ञा नही है। २०२५ में कोई किसी की आज्ञा का पालन करे तो अच्छी बात है।

वास्तव में देव का बनकर रहना है । यह बड़ी से बडी बात है । अभी पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)ने अच्छी बात कही है। महाराजने इतने वर्षो तक रामानंद स्वामी को लाये । इससे पहले आत्मानंद स्वामी जैसे भी मिले थे । जिसने पढा होगा उसे इतिहास का ज्ञान भी होगा । महाराजने उनका त्याग कर दिया था । क्योकि यह उल्टा सीधा सिखाते थे । महाराज सब कुछ अनुभव करने बाद में आज्ञा किये है। यह मुझे नही पता है कि मै आज्ञा करने वाला हूं। अभी तक कोई भी आचार्य आज्ञा नही दिये है। इस लिये मेरा निवेदन है कि ऐसा कुछ नही बोलना चाहिए । क्योकि इस दुनिया में कही बढ जायेगे तो नीचे उतरना कष्टदायक होगा। बात आई है तो कह रहा हूँ कि महाराजने वचनामृत में अच्छी बात बताये है। वैसे महाराज की बातो पर टिप्पणी नही की जा सकती है। लेकिन मुझे कुछ बात लडती है। इसमें ऐसा कहे है स्वाभिमान का भी घमंड नही रखे । स्वाभिमानी होने पर आप प्रसंशा करे तो इसमें

अभिमान आता है। यह सत्य है ? कई बार हम देखे है। यह अधिक निर्मानी है । ऐसा कहने पर दस वर्ष बाद इसको बचाने में दम निकल जाता है। यह सत्य है।

सत्य तो यह है कि हमें भगवान का होकर, देव का होकर रहना है। देव का जो हो उसी का साथ करना चाहिए । यह महाराज के वचन है। साथ बलवान होता है। किसका साथ करे किसका साथ नही करे इसे महाराज कहे है। मान लीजिये में इस समय कह रहा हूं कि तो कह रहा हूँ। सत्संग की **Meaning** जो सत्य है, जो सनातन है, जो सर्वदा रहे उसका साथ करे । भगवान तथा भगवान के भक्त का साथ करे । इस संतो से पूछकर देखे घर-घर के है । इसलिये प्रेम से कह रहा हूँ। इनके शिष्य खराब है इस लिये नही कर रहा हूँ। लेकिन मेइनटिनेसे है। कठिन हो गलत है तो आप छाती के उपर हाथ रखकर ना कर सकते है। बाद में कुछ हरिभक्त गुरु हुए है। उन्ही भी शिष्य की शौक आ गया है। वे शिष्य लेकर डिस्को करते है। गाते और नाचते है।संसार भयंकर है।

देव का होकर रहे। जो सेवा है देव की है। धर्मादा देव का है। नरनारायणदेव देश के हरिभक्तो से विशेष रुप से कह रहा हूँ कि धर्मादा अवश्य निकाले। सेवा नही दे तो चलेगा, लेकिन धर्मादा दे। कोई व्यक्ति सुखी होता है तो देव के आदेश का पालन करता है। तो धर्मादा भी महाराज का आदेश है । मेरा नही । हम सभी दूसरा कुछ अधिक करते है। चोरी रखते है छोटी-बडी। यह कही नही किया है कि आप ऐसा करें। धर्मादा निकाले। नरनारायणदेव का जो हो । जिसका दस्तावेज नरनारायणदेव का हो उनसे अधिक कह रहा हूँ । संदेह हो तो संविधान माँगे । सीधा कहना है । महाराजश्री के पास जा रहा हूँ । मैं कालुपुर मंदिर में दे दूँगा। वहाँ से ले लेना। बद्रीनाथ से लेकर मंदिर के सभी खाते कालुपुर मंदिर से कार्यरत होते है । हमारे ट्रस्टी यहाँ पर बैठे है।ये सभी जातने है। सभी रसीद बुक-सभी रसीद यहाँ पर रहती है। छपैया भी नही जाना है। कही पर नही जाना है। सब यही पर किया जाता है। जो देव का है वह रहने वाला है। यह सत्य कह रहा हूँ।

आप देखते है । चमक-दमक अधिक रहती है लेकिन शीध्रता से गिर जाता है। लेकिन मै रास्ता देखता हूँ । चमक-दमक कितनी भी हो दुनिया में चमकने दो । हमें तो भगवान का होकर रहना है । यही जीवन का लक्ष्य है और ध्येय भी है। जब से आप कंठी धारण किये, टीका लगाये, सत्संग समझ में आया तब से अपना क्या कार्य है। केवल देव का होने का अर्थ है। यही गति भी है। अधिक **Simple** है। इसलिये विशेष आग्रह है।

कई लोग कहते है खुश रहो । सभी हरिभक्तो को प्रेम पूर्वक लगाव है । इसलिये आप लोग कहते है । हम मानते भी है। और सहमत भी है। किसी दिन नाराज हुए। कुछ गलत होगा तो अवश्य होगे । देव के अलावा कोई समायान्तर कोई दुनिया हो तो सहन नही होगा । यह मैने पहले ही कह दिया हूँ। सिद्धान्त से समझौता नहीं करना है। आज भी नही होगा। आने वाले पीढ़ी अहमदाबाद देश में नही होगा । यह लिखकर देता हूँ। यह विकास करना हम सभी की जिम्मेदारी है।

आज हम लोगो को ऐसे भगवान मिले है। आप सोचे, मुझे तो लंदन भी जाना था । नही गुरु पूर्णिमा है। आज देव का दर्शन होगा । तथा हम सभी आज देव का दर्शन करने आये है। मेरा नही । महाराजने यह (आचार्य पद) बनाये है। भगवान के कारण इस स्थान की गरिमा है । ठीक है न । लेकिन जिम्मेदारी बड़ी है। कठिन भी है। **End of the day** व्यक्ति के रुप में यह वस्तु नही इस जगह की गरिमा है। गुरु पूर्णिमा है। देव का दर्शन करने आये है । और गुरु एक ही है । अंदर (सिंहासन) पर विराजमान श्रीहरि द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा मे उत्तर विभाग में त्यागी गृहस्थ हम सभी के गुरु

वर्तमान समय मे आप ही है । पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) महाराज के समय की प्रणाली बताये है । अर्थ तो यह होता है कि संतो के पीछे गुरु के रुप में आचार्य का नाम आता है । इतना है । इतना अच्छा है । वाया - मेईटीनेन्स अधिक नही बढाये । हमे फोन करके पूछना पडता है । खाये ? की नही खाये ? क्या हुआ ? ऐसा नही है तुम्हे ? यहाँ पर रहे और फोन आये । कहाँ पर गये है ?

वास्तव में इतना विशाल जन मानस एकत्र हुआ है । यह बड़ा त्याग है । संत का क्या विशेष हरिभक्तो का है । काम होने के बाद भी आज यहाँ पर इतने लोग आये है । आज के समय में समय देना सबसे बडी बात है । झूम बनाये । सभी लोग मेहनत कर रहे है । अच्छी बात है । इससे बडा सतयुग संसार में दूसरा कही पर नही है । अभी कोई मिलकर कहा है कि 'हलाहल कलियुग है' । है तो आप के लिये है । हम लोग तो सत्युग से आगे रहते है । अक्षरधाम से वेत उपर है । भगवान जैसे भगवान मिले है तो हमारे लिये कलियुग कैसा ! यह कलियुग आप के लिये होगा । हमे तनाव हो गया कि हलाहल क्या है ? उस आदमी को देखने के बाद पता चला कि उसे डाक्टर की आवश्यकता है । दूसरा कुछ नही चाहिए ।

इन बच्चो को धन्यवाद है । कि परम्परा और संस्कार बाचकर इतनी प्रगति किये है । इनके माता-पिता धन्य है । अभी दो-तीन बार बाहर जाने का अवसर मिला । कैनेडा गये थे । महंत स्वामी ने कहा १५० करोड १५० करोड नही, १५ मिलियन डालर है । १५० करोड रुपया यहाँ से तो नही ले गये है ? वहाँ का वही पर उपयोग किया जाता है । लेकिन रकम बडी है । विदेश में खाली जगत के लिये १५ मिलियन डालर पहले बार प्रयोग किया गया है । टोरेन्टो में अपने प्रत्येक गाँव से बच्चे-बच्चियाँ विद्यार्थी के रुप में ये है । उन्ही के लिये यह मंदिर किया गया है । आज यही बच्चे अपने मंदिरो में सेवा दे रहे है । धन्यवाद है । आप सभी माता-पिता तथा वृद्धो ने जो संस्कार दिये है । तभी यह कुछ हो रहा है । वास्तव में यही है । शेष तो बहुत कुछ होता रहता है । आप मेरी प्रशंसा करे और मैं आप की करु ऐसा नही मैने प्रत्येक जगह पर सेवा करते देखा हूँ । दादा बच्चो को लेकर आते है । नाम पू छते है तो पता चता है कि कितना त्याग करके समय को छोडकर आकर सेवा देते है ।

साथ ही साथ अभी पी.पी. स्वामीने कहा कि कई ईशत्व, तथा मंदिरो में कार्य चल रहा है । जेतलपुर का उत्सव, शिक्षापत्री का समैया सेष अनय है । यह क्रिया-कलाप चलते ही रहना है । अंत नही आने वाला है । देव के कारण यह सब कुछ हो रहा है । भगवान के कारण यह हो रहा है । इन सभी कार्यो में आप सभी का योगदान है । अभी महंत स्वामी ने कहा है कि प्रसाद लेकर मंदिर में गाडी जाती है । जिसे आवश्यकता होती है । उसे भोजन दिया जाता है । हमारे वाडी के बगल में रोड बन रहा है । इसमें २५ से ३० छोटे बच्चे भी है । मेरा घर बडा है । एक छोटा गाँव बने इतना बडा है । यह घर देव का है । मेरा नही है । जहाँ पर हम रहते है देवकी जमीन है । मंदिर का यह स्थान है । ये कपडे देव का पहनते है । स्पष्ट रुप से बता रहा हूँ जिस गाडी से आते है वह भी मंदिर की है । नरनारायणदेव का है । जो भी है देव का है । भोजन अधिक बनता है । अधिक होने पर भगत जी बालको को दे देते है । एक दिन गादीवालाश्री ने देखा बचा हुआ अन्न क्यो ले जाते है । इनके लिये अतिरिक्त बनना चाहिए । इस लिये मैने नाराणपुरा मंदिर में फोन करवाया । इतने लोगो को भोजन करवाना है । कारण मानवता के यदि मूल्य भूल जायेगे तो कितना भी माला करे तो का नही आयेगा । यदि मानवता नही है तो सब कुछ बेकार है । भूखे को देखकर

हृदय द्रवित न हो तो चाँदला करना बेकार है । कोई ने दुखियो रे, देखी न खमाय, दाय आणी रे अति आकरुपाय अन्न धन वस्त्र रे, आपी ने दुख टाले, करुणा द्रष्टि रे, देखी वात न वाले... यह पद प्रतिदिन गाने के लिये है । यदि कोई भूखा रह जाता है तो सब कुछ किया व्यर्थ है ।

दूसरी बात कहे हमारे घर कई हरिभक्त अनाज दे जाते है । हमे अनाज इत्यादि देव देते है । संग्रह करने से क्या लाभ है । इस लिये बगल में परोक्ष हनुमानजी का मंदिर है । वहाँ पर भी राम-रोटी दी जाती है । वहाँ पर गादीवाला पार्सल भेज देती है । २५०-३०० जितने होगे । जिसका घर नही है । रहने का स्थान नही है । हम पहचानते भी नही है । लेकिन जरुरत वाले है । मानवता के विना धर्म नही चलेगा । मानवता विना सम्प्रदाय नही चलेगा । भगवान भी नही खुश होगे । कितना पूजा-पाठ टीका करे । मानवता हो ना ही चाहिए ।

आज कल हम सभी शिक्षापत्री का उत्सव मना रहे है । महाराज शिक्षापत्री में यही लिखे है । जीवन के अंदर मानवता हो, एक-दूसरे के प्रति सद्भावना प्रेम और लगाव होना चाहिए । वह लगाव यहाँ पर दिखायी देता है । नही तो क्या एकत्र होते ? आज कोई भी हरिभक्त देश का हो, विदेश में हो, गाँव में हो, शहर में रहे उसे कुछ समस्या हो तो हम लोग आपस में खडे रहते है । क्या सम्बन्ध है । हम ? कई बार कहे है । सूतक का सम्बन्ध भी नही है । हम यु.पी. के है । आप गुजरात के है । कोई राजस्थान का है, कोई बनासकांठा कोई कच्छ या काठियावाड का है । लेकिन अपने बाप एक ही है । यह ध्यान रखे । सब कुछ बदलता है बाप नही किसी दिन नही बदलता है । इस गद्दी पर बैठने वाला भी बदलता है । बडे बापजी थे । इसके बाद मुझे बैठाये । सत्य बोल रहा हूं । आप नही माने तो क्या होगा ? यह पद अधिक जिम्मेदारी का है । साढे तीन वर्ष बापजीने बोला, पी.पी. स्वामी जानते है । मैने कहा आप की हस्ताक्षर करना है । मजदूरी हम करेगे । धर्माचार्य और संत जितने पुराने होते है । वे सोने जैसा बन जाते है । अधिक होने पर बापजी की आज्ञा का पालन करना ही चाहिए । इस गद्दी पर पहले केशवप्रसादजी दादा, पुरुषोत्तमप्रसादजी दादा, वासुदेवप्रसादजी दादा इसके बाद देवेन्द्रप्रसादजी दादा आये कितने लोग बैठे है ? बदले की नही ? आप में बदले की नही ? हम देख रहे है । आप की पीढी आ रही है । और जा रही है । संत भी बदलते है । गुरु के गुरु होते है । लेकिन इस (सिंहासन पर बैठे नरनारायणदेव) नही बदले और बदलेगे भी नही ।

यह गर्व करने की बात है । महाराजने प्रतिष्ठा किया तब से आज तक एक माईक्रो मिलीमीटर हटे नही है । ये भगवान अपने पास है । छपैया जन्मस्थान अपने पास है । इसका स्वाभिमान रखे । शेष मुझे कुछ नही चाहिए । रुपया नही चाहिए । रुपया तो लोगो के पास अधिक है । गुंडा, बदमाश स्मगलर के पास भी धन होता है । लेकिन सुख नही । सुख भगवान के चरणो में है । इस सत्संग मैं है । भगवान की कृपा से अपना परिवार सुरक्षित है । नही तो विखर गया होता । ऐसा सतयुग कही नही है । यहाँ सभा हो रही है । लंदन में भी हो रही है । सभी जगह गुरुपूर्णिमा मे ही नही अन्य सभा में हजारो हरि भक्त होते है । आप ही बताये । भगवान नही मिले होते तो क्या स्थिति होती ? बहुत **Simple** बात है । गलत बात है ? आप ही विचार करें ।

महाराजने हम सभी को अन्न, धन, वस्त्र से सुखी रजे है । कितने प्रोजेक्ट चल रहे है । आज करोडो रुपया हरिभक्त देते है । भक्तो को धन्यवाद है । कि जो बच्चो के उपर खर्च करना था । उसे प्लस-माइनस करके त्याग करते है । **Appreciation** अधिक है । भगवान नही मिलते तो क्या ? हम कहाँ पर रहते ? किनारा मिलता ?

सत्य तो यह है कि जो मिला है उसे सोचे तो बहुत मिला है। भगवान तो केन्द्रस्थान पर है, केन्द्र बिन्दु है। इसके साथ पैकेज आता है। विचार करने पर सत्संग मिलता है। सुख-दुःख में खडे रहने वाले बच्चे-बच्चियाँ मिलते है। यह सब संसार में कहाँ मिलता है।

अभी कैनेडा जाना हुआ। एक मित्र जो सीनियर एटर्नी एडवोकेट है उनके साथ बात कर रहे थे। विदेशो में मंदिर बनाकर क्यो भटकना है। दूसरा कोई कार्य नही है क्या ? उसका सत्संग से लेना देना नही लेकिन वह मुझ से यह बात बोली। जो भी मंदिर विदेश में बन रहे है। उससे अपने बच्चो का भविष्य तथा संस्कार अच्छा बना रहे। इसके बाद में वहाँ से निकल गया। ३० घंटे जहाज मे अधिक मजा तो नही मिलता है। इससे अच्छा ट्रेन में जाना अच्छा है। यह सब देव की कृपा से होता है। देव की कृपा हमेशा बनी रहे। इस पर ध्यान देना है।

मैं चार चरण (नरनारायणदेव के चरण) के कारण हम सभी सुखी है। इस लिये देव का बनकर रहे। नरनारायणदेव का हो वहाँ पर कदम बढाये। शेष संसार में पडना अच्छी बात नही है। इसमें जाने पर खो जायेगे।

अब आरती का समय हो गया है। बहने धुनक र रही है। देव का दर्शन करियेगा देव का बनकर रहियेगा। मेरा होकर रहने की आवश्यकता नही है। आप के प्रेम लगाव के कारण गाँव मे हम जाते है। यह अपना सम्प्रदाय है। अपना परिवार बडा है। रात को सोते समय विचार करियेगा कि हमे जो मिला है। वह दूसरो के पास है क्या ? नरनारायणदेव देश को जो मिला है। वह दूसरे को प्राप्त है ? सभी पैर ऐसा ही करते है। अपने बाप बड़े है। अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति अपने बाप बडे है। वे अपने पर ध्यान देते है। देव का दर्शन करते रहना। यह विशेष सलाह है।

सभी का अनेकानेक धन्यवाद है। अभी बात हुए कि बहने नरनारायणदेव के रसोई के लिये ४ करोड एकत्र की है। आप सभी लोग इतने आते है। लगभग सभी हरिभक्तो को पहचानते है। जानते है। प्रेम है। आप सभी का महाराज मंगल करे ऐसी नरनारायणदेव के चरण कमल में प्रार्थना है।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण		रसोई
चुरमाकालड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
मालपूवा	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
खीरपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
शीखंड पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
जलेबी	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ५,०००/-	रु. २०,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. ३,०००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु. १0,000/-
स्थायी सुरक्षित थाल (सांजमे) रु. ५,00१/-
ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-
Mo. : 8238001666

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

अपने म्युजियम मे रखी वस्तुओ को सरलता से महिमा समझी जा सके तो उसके लिये नयी तकनीक का प्रयोग किया गया है। पहले हॉल में श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा और देश विभाग के लेक को ३डी मैपिंग द्वारा आडियो और विजुअल के माध्यम से विस्तार से समझाया गया है । इसी प्रकार पूरा म्यूजियम अलग-अलग रुप की तकनीक के माध्यम से दर्शनार्थी को अच्छा लगे। ऐसा बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-जुलाई-२०२५

ता. ११-०७-२०२५ प.भ. धवल रमेशभाई पटेल - महादेवनगर।
ता. १३-०७-२०२५ श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - साबरमती-अहमदाबाद।
ता. १९-०७-२०२५ (शायं ३ बजे) प.भ. घनश्यामभाई मगनलाल पटेल - कुंडलवाले - नवरंगपुरा।
ता. २०-०७-२०२५ (शायं ३ बजे) प.भ. अश्विनभाई वासुदेवभाई मोदी - भाडज - अहमदाबाद - प्रेर. स.गु. घनश्याम स्वामी - कोटेश्वर गुरुकुल
ता. २७-०७-२०२५ प.भ. प्रीत मुकेशभाई विनुभाई सोजीत्रा - एप्रोच-बापुनगर।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "निर्जला एकादशी व्रत"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अभी कथा में आज्ञा है कि हम सब को भरी थाली प्राप्त हुई है। हमे यह ध्यान देना है कि पाचन अच्छे से हो। शरीर स्वस्थ होने पर सब कुछ पच जाता है। इसी प्रकार ''आत्मा'' निरोगी होने पर आध्यात्मिक ज्ञान पच जाता है। इस लिये आत्मा को स्वस्थ रखने का पूरा प्रयास करना चाहिए। महाराज सब कुछ दे कर गये है। हमे ध्यान देकर खाना है ताकि पाचन बना रहे ? हमारे प्राय: बारस दिन एकादशी आती है। जो एकादशी द्वादशी के योग वाली होती है। यह अधिक प्रभावशाली होती है। शास्त्र के आधार पर द्वादशी भागवाली एकादशी करने से सौ यज्ञ का फल मिलता है। तो इसका अर्थ यह हुआ कि दूसरे को जो मिलता है। उससे हमें सौ गुना प्राप्त होता है। यह महाराज बताकर गये है। प्रत्येक विषय पर महाराज बताकर गये है। महाराज के कथनानुसार हमे यह कार्य करना है।

निर्जला एकादशी के दिन कई लोग प्रश्न करते है कि दूध पी सकते है ? पानी विना चाय-काफी पी सकते है ? दूध-फल खाने से एकादशी का फल मिलता है। लेकिन निर्जला एकादशी का फल नही मिलता है। शेष कुछ लोग रात के बारह बजे के बाद फलहार कर लेते है। ऐसा नही होता है। रात के बारह बजे का रिवाज अंग्रेजो का है। यह अपना नही है। आप सोचे दिन कब होता है। जब सूर्योदय होता है। कभी सूर्योदय बारह बजे होता है ? हमे अंग्रेजो के रीत रिवाज के अनुसार नही बल्कि हिन्दु धर्म के आधार पर दूसरे दिन के सूर्योदय के बाद जल पान करना चाहिए। एकादशी के पूर्व पानी पी सकते है। जो व्यक्ति व्रत कर सकता है। जो विधिपूर्वक व्रत करना हो तो इस बात पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। जो दवा लेते है वह पानी के साथ दवा खा सकते है। भगवान अन्तर्यामी है। उन्हे सब ज्ञात है। अनिवार्य अवस्था में माफ कर देते है। दवा लेने पर दुःखी नही हो। भगवान से कहे आप खुश रहे। सर्दी की दवा, सिरदर्द की दवा तो छूट नही है। पूजा के समय आचमन करते है तो उसमें अल्प मात्रा में ढाल ग्रहण करे। गडारा करे तो जल घट से नीचे नही जाना चाहिए। मन सब तरफ ले जाता है। एकादशी के दिन विष्णुसहस्त्र नाम का स्मरण करना चाहिए। किसी की निंदा नही करनी चाहिए। कम बोलना चाहिए। गाँव की वार्ता नही करना चाहिए। शरीर को जैसे नियंत्रण में रखे। इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह निर्जला एकादशी सभी पापो का नाश करती है। इन्द्रिय नियंत्रण करके उपवास करे। निर्जला एकादशी के व्रत का फल प्रत्येक प्रहर में बुद्धि करता है। उदाहरण के रुप में तीन घंटे का एक प्रहर होता है। एक प्रहल का ५०% फल मिलता है। दूसरे प्रहर का १००% से ज्यादा फल मिलता है। प्रत्येक प्रहर पुष्य में वृद्धि हो जाती है। शास्त्र के आधार पर जो व्यक्ति निर्जला एकादशी के दिन जलपान नही करता है। उसे प्रत्येक प्रहर का करोडो पल सोना देने का पुण्य मिलता है। एकादशी के दिन स्नान, दान, जप, होम जागरण करने सब कुछ ''अक्षय'' बनता है। कभी इस फल का क्षय नही होता है। कुछ लोग उपवास का समय घर के काम में खर्च कर देते है। ऐसा नही करना चाहिए। एक तरह का स्वयं के प्रति अविश्वास है। उपवास अर्थात् क्या ?

उपवास का अर्थ यह है कि 'भगवान के पास रहना' खाना-पीना भी याद नही रहे। इस तरह भगवान के भजन मे व्यस्त रहे। अपना मन भगवान के साथ

जुडा रखे । अन्य प्रवृत्तियो में मन जोडना उपवास नही होता है। ऐसा करने से पुण्य नही मिलता है। हम जब कोई करते है तो उसका एक 'लक्ष्य' होता है । कारण से कार्य सरलता से होता है। हम एकादशी व्रत करते है तो उसका उद्देश्य क्या है ? क्यो करते है ? सभी लोग करते है ? इस लिये । भाव ऐसा रखे महाराज खुश हो । तब प्रेम से से होगा। निर्जला एकादशी अनमने मन से नही करता चाहिए। मन से तैयार होना चाहिए। मन में दृढ संकल्प कर ले कि हमे कष्ट नही होगा। भगवान नियम के साथ शक्ति भी देते है । महाराज हम सभी के पीछे खडे ही है । महाराज यह नियम हम सभी को परेशान नही करना चाहते है । जैसे माता-पिता बच्चो के कार्य करने के लिये कहते है । तो उनका परेशान करने की ईच्छा नही होती है । माता-पिता को बच्चो की चिंता करते है। मेरा लडका गलत मार्ग पर नही चले। अनुशासन में रहे। स्थायी रुप से बालक के पीछे खडा रहता है । उसी प्रकार भगवान हम सभी की चिंता करते है। कलियुग में हमारे भक्त है। सब को अच्छी तरह से तैयार करते है। ताकि पुनः मृत्युलोक में नही आना होता है। कैसे हो सकता है ? भक्तो के साथ रहने पर हमें प्रेरणा मिलती है । हम एक दूसरे को देखकर कार्य करते है। सत्संगि का साथ होने से प्रेरणा मिलती है।

विधिपूर्वक निर्जला एकादसी करने से शुक्ल पक्ष एवम् कृष्ण पक्ष का लाभ मिलता है । इस एकादशी के पुण्य का वर्णन नही कर सकते है । सभी तीर्थो का फल मिलता है। सभी दान का पुण्य मिलता है। शरीर साथ दे तो अवश्य करना चाहिए। इसमें दो बात है। बहाना भी नही बनाना है। और एकादशी महाचरण को नही करे । श्रद्धा पूर्वक व्रत करना चाहिए । भगवान से प्रार्थना करना कि आप हमारे साथ रहे। शक्ति दे। ताकि हम व्रत कर सके। जब उपवास का पारणा करे तब भोजन की थाली लेकर नही बैठ जाना चाहिए। सब कुछ धीरे-धीरे ग्रहण करना चाहिए। पहले कुछ पानी पीना चाहिए। नीबू सरबत का प्रयोग करना चाहिए। फल खाना चाहिए। बाद में अन्न ग्रहण करना चाहिए। श्री नरनारायणदेव के चरणो में ऐसी प्रार्थना करे की हमे शक्ति दे कि आप निर्जला व्रत पूर्ण करके उनकी कृपा प्राप्त करे।

●

धर्म ही जीवन का सार है

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

निष्कुलानंद स्वामी जीवात्मा को सावधान करने के लिये सलाह देते है । ''धर्म-धर्म सभी लोग कहते है लेकिन धर्म के अधिक मर्म है।'' धर्म वह धर्मसुत बचन ही परमधर्म है ?'' हम महाराज के बचन अनुसार जीवन बिता सकते है। फिर भी मन में प्रश्न होता है कि धर्म अर्थात् क्या ? महाराज के द्वारा बताई गयी आज्ञा ही धर्म है। आज्ञा का अनादर करके जीवन बिताना वह धर्म का छोटा भी नही है। तिलक-चाँदला करके बड़ी बड़ी बात करे तो भी क्या ? यदि हम अपने जीवन मे एक आज्ञा का पालन नही कर सके। तो भक्त कैसे माने जा सकते है।

आज समाज में धर्म का अर्त पूजापाठ, कर्मकांड तक सिमित हो गया है । शिक्षापत्री में भगवान स्वामिनारायणने धर्म की अच्छी परिभाषा दिये है । जो वृत्ति और स्मृति उन्होने प्रतिपादित किये है । उस सदाचार को धर्म समझे । स्मृति शास्त्र का विधान है । आचार-परमोधर्मः जिस आचरण से स्वर्ग आदि लोक मोक्ष सम्बन्धी सुख मिले उसे धर्म कहते है। आहार, निद्रा, भय, विषय, भोग इत्यादि मनुष्य मैं है। वैसे पशु में भी होता है। मनुष्य को उच्च तथा पशु तो निम्नस्तर में रखा है । वह किस लिये ? क्योकि मनुष्य में धर्म विशेष है । मूल्य भी धर्म का है। जिस मनुष्य मे धर्म नही है वह पशु समान माना जाता है।

धर्म मनुष्य को मानव बनाता है । धर्म मर्यादा रहकर महान बनता है। जिसप्रकार विशाल पेड की जड वह पेड के विकास का नियंत्रण नही है । वह उसके

अस्तित्व को बनाये रखने में सक्षम होता है। उसे प्रकार धर्म मनुष्य को उर्ध्वगामी बनाता है । धर्म बिना जीवन आत्माविना शरीर जैसा है । जिस में न तो तेज, प्राण पवित्रता नही होती है । जीवन में प्राण और पवित्रता धर्म लाता है।

धर्म बोलने का विषय नही है। जीवन का विषय है। यह विशेषण का विषय नही है। लेकिन कलेवर रंगने का विषय है । आप जीवन की प्रथम सीढी है । वास्तव में मनुष्य बाहर से अधिक धार्मिक दिखता है तो शायद वह अंदर से कलुषित हो । वह सताद्वेष से पूर्ण होता है। जीवन के अंदर क्रोध, अहंकार भरा हो । लोभ-लालसा-धृणा औन मान के साथ पूर्वाग्रह हो तो वह मानव जीवन का धर्म नही है । जीवन में विक्षेप तो आना ही है । लेकिन धर्म जीवन जीने को बताता है । धर्म हमे और आप को सदाचारी बनाना सिखाता है । शेष हम लोग धर्म को छोडकर कहाँ खडे है । वह हमे अपने हृदय के उपर हाथ रखकर सोचना है।

भगवान स्वामिनारायणने वचनामृत में बोले है कि ''जो भगवान की मूर्ति का आश्रय करता है। भगवान के चरित्र का गान और पठन करता है । भगवान का नाम स्मरण करता हो । यदि उसमें धर्म नही है तो वह सिर पर बोज रखकर समुद्र पार करना चाहता है। धर्म का इतना महत्व होने के बाद भी लोग कुत्ता बिल्ली तोते पालते है। लेकिन धर्म नहि पालते है । वृद्ध माता-पिता को नही पालते है। यह मानव समाज की एक करुणता है.

मानव जीवन मे जीव प्राणी के प्रति यदि प्रेम नही तो धर्म और भक्ति असम्पूत है। संसार के सभी जीवो को प्रति प्रेम होना चाहिए। जिस मानव के दिल में प्रेम रहता है वह दूसरे को दुःखी नही करता है। जहाँ पर प्रेम होता है। वहाँ पर दया का इतना सदैव प्रवाहित होता है । आज मनुष्य के प्रेम का झरना रुक गया है । प्रेम के बदले में धृणा और तिरस्कार, करुणा के बदले कठोरता, उदारता की जगह कृपणता त्याग के स्थान पर राग आ गया है। वास्तव में मनुष्य निर्दयी बनता जा रहा है। जिसके दिल में प्रेम है, करुणा है, लगाव है। वह मनुष्य प्रभु के समीप है।

•

प्रेमी भक्त आंबा शेठ

– ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

भगवान श्री स्वामिनारायण के असंख्य भक्तो में से गढाली के चुस्त, सेवा भावी, प्रेमी भक्त ''आंबा शेठ'' प्रथम पंक्ति में माने जाते है । आंबा शेठ गढाली गाँव के निवासी थे।

आंबा शेठ को प्रभु से मिलने के लिये अति जल्दी थी । प्रभु को सुनकर वन में चले गये । अंतर से प्रभु की प्रार्थना किये । तो वहाँ पर आकाशवाणी हुई कि ''प्रभु अवतार लिये है। दुर्गपुर गढडा में आप जाओ । वहां पर भगवान श्री स्वामिनारायण मिलेगे ।'' महाराज के प्रताप और प्रभाव को सुनकर भावुक प्रेमी हृदय दर्शन को लिये अधीर हो गये। छोटे बच्चे जैसे माँ के पास दौड लगाते है। वे नंगे पाँव दौडते गढपुर गये । महाराज सभा में बैठे थे। उन्हे दूर से आता देख मंद-मंद हास्य किये। ''आओ आंबा शेठ ! नाम लेकर बुलाये । आंबा शेठ दण्डवत किये । महाराज प्रेम से खडा होकर स्नेह पूर्वक आलिंगन किये। तथा सिर पर हाथ रखे। वह महाराज के आश्रित बन गये। आंबा शेठ के हृदय में महाराज के प्रति अमृतमय प्रेम सदैव बरसता रहता था । कोई नयी वस्तु बनाते तो प्रभु को अर्पण किये बिना प्रयोग नही करते थे। छोटी-बड़ी सेवा स्वयं करते थे।

आंबा शेठ प्रतिदिन नियम से प्रातः उठकर महारा जके दातुन करने से पहले गढाली से गढडा तक पैदल जाते थे । वे दातुन अगले दिन अच्छी रख लेते थे। उस दातुन के कुछ भाग को कूचकर पीसी इलायची के बर्तन

में पूरी रात रख देते थे । सुगंधित दातुन हर मौसम में महाराज के लिये लाते थे । दण्डवत प्रणाम करके संतो के पैर छूते थे । तथा प्रभु को याद करते वडाली गांव पारस आते थे । शेठ के विशेष प्रेम के परिणाम स्वरुप विशेष सेवा से महाराज खुश होकर सदा आंबा शेठ का अन्तकरण शुध्ध रखते थे ।

आंबा शेठ को महाराज की पहचान होने के बाद जीवन उन्नत बना । प्रेम से आंबा शेठ महाराज और संतो को मालपूवा और खीर स्वयं के हाथ से बनाकर खिलाते थे । महाराज और संतो की सेवा हेतु सदैव तत्पर रहते थे । महाराज को दोनो हाथ जोडकर विनय से कहे कि मैने आप का नाम ''न्यालकरण'' रखा है । आप हमारे जैसे कई लोगो को निहाल किये है ? जो आप से मिला वह निहाल हो गया है । यह आप की सार्मथ है । मुझे ऐसा अनुभव हुआ है । इस कारण से आप का नाम न्यालकरण रखा । महाराज मंद-मंद हँसते प्रेमी भक्त की समझ से खुश हुए । आंबा शेठ ने दसमण साकर (शक्कर) मगाकर प्रसाद के रुप में पूरे गाँव में बटवाया । पूरे गाँव में 'जय न्यालकरण' करके बाँटे थे ।

आंबा शेठ को चार पुत्र तथा दो लाख के स्वामी थे । दो बच्चे महाराज का सत्संग करते - भजन करते थे । ये शेठ के पूँणी थे । समझदार शेठ को गले लगाकर छाती पर चरणारविंद दिये थे ।

•

बद्रीनाथ

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल)

लक्ष्मण झूले से चलकर वर्णीराज वन-पर्वतो को लाँधते, नदी के घाटो को पार करते, बन्यजीवो जहाँ पर हिंसक आवाज लगा रहे थे । जहाँ पर अच्छे से अच्छे लोग भयभीत हो जाये । मात्र १२ वर्ष की उम्र में वर्णीराज निडरता से आनंद करते आगे बढ़ रहे थे । चलते-चलते बद्रीनाथ गये । बद्रीनाथ में नारायणदेव विराजमान है । बगल में अलखनंदा नदी उन्मत्त रुप से बहती है । इस बर्फीले स्थान पर वर्णीराज के शरीर पर कापिन सिवाय कुछ भी नही था । ठंडी का असर उन्हे नही था । खुशी से एक भेड के उपर बैठकर हिमालय का सुंदर दृश्य देख रहे है ।

तथा अलकनंदा नदी के कल-कल आवाज को सुन रहे है । इसी समय ब्राह्मण के वेश में सतयुग वर्णीराज के पास आये । अपने दुख का निवेदन किये कि पहले सभी लोग सत का आचरण करते थे । अब तो सभी अधर्म का आचरण करने लगे है । अब तो मुझे कोई मानता ही नही है । वर्णीराज यह सुनकर कहे मै आप का दुःख दूर करुगा । और सत धर्म की स्थापना करुगा । एक दूसरे व्यक्ति बनिये के भेष में आया और बोला कि मै द्वापर युग हूँ । हमारे समय में लोग यज्ञ-योग करते हुए सत मार्ग का पालन करते थे । देव सेवा में तत्पर रहते थे । अब यह बंद हो गया है । तो श्रीहरि अब मै क्या करु । वर्णीराजने कहा सब की उपाय करुँगा । आप चिंता नही करे । और वरदान दिये । इसके बाद एक आदमी क्षत्रिय का रुप धारण करके आया । और बोला कि मै त्रेतायुग हूँ । मेरे समय में लोग यज्ञ करते थे । देवताओ की पूजा करते थे । धर्मका पालन करते थे । इस यम कोई पालन नही करता है । वर्णिराज ने वचन दिया कि यज्ञ, पूजन,भजन कराउगा । आप चिंता मत करें । इसके पश्चात भील रुप में एक व्यक्ति आया ।और बोला की मै कलियुग हूँ आप प्रगट हुए है तो अधर्म का नाश होगा । तो अब मै कहाँ निवास करु ? वर्णीराज ने कहा जो धर्म का आचरण न करे । वहाँ पर आप रहे । कलियुग खुश होकर वर्णीराज सो प्रणाम करके आगे बढे ।

इस प्रकार चारो युगो ने अपने दुख-निवेदन किये थे । नारायण भगवानने वर्णीराज की मनुष्य रुप धारण करके आरती उतारे ।

समैयो

के उपलक्ष्य में

"समैयो" के उपलक्ष्य में विश्वका सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर में हीरे का हिंडोला दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवम् पूरे धर्म के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की सुंदर प्रेरणा से तथा स.गु. कोठारी शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी के देखरेख मार्गदर्शन से विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वानिारायण मंदिर अहमदाबाद में आगामी महामहोत्सव समैया के उपलक्ष्य में अपने निज मंदिर के पीछे के भाग में सुंदर कलात्मक हीरे का हिंडोला दर्शन ता. १०-७-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया। तथा निज मंदिर में भी हीरे से सजाया गया है।

ठाकुरजी समक्ष निज मंदिर में अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक परम्परागत जरी, ड्रायफ्रुट, शाकभाजी, हरी मेवा, पवित्रा, राखी आदि से सजा हिंडोला बनाकर बालमुकुन्द भगवान को पूजारी ब्रह्मचारी स्वामी शायंप्रतिदिन झूलाकर दर्शन कराते है। इस सभी हिंडोला की सेवा अपने निष्ठावान हरिभक्त प.भ. रणजीतसिंह दरबार, प.भ. सुरेशभाई (कोठार), श्री हार्दिकभाई राजपुरोहित घाटलोडिया मंदिर, आर.सी. टेकनिकल मंदिर पंकज भावसार तथा नया वाडज के भक्तो ने सेवा दे कर प.पू. आचार्य महाराजश्री को खुश कर आशीर्वाद प्राप्त किये। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा तुलसी के कुंडे का वितरण

आगामी समैया के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. ६-७-२०२५ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पर्यावरण के भाग रुप में तुलसी के कुंडे हरिभक्तो को अधिक संख्या में बाँटा गया। साथ में ही अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी और आदि संत भी उपस्थित थे। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

दंढाव्य देश के शिरोमणी प्रसादीभूत माणसाधाम में बालयुवा शिबिर और सिक्षापत्री वक्तृत्व स्पर्धा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षता में आयोजित आगामी अपना महामहोत्सव "समैया" में पू. स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (कालुपुर) के प्रेरणा से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. अजयप्रकाशदासजी (माणसा) तथा स.गु. महंत शा. स्वा. देवप्रकाशदासजी (उनावा) के मार्गदर्शन में दंढाव्य प्रदेश की प्रसादी की भूमि माणसाधाम में ता. १३-७-२०२५ रविवार प्रात: ९ से १२ के मध्य चौधरी संकुल माणसा में बालयुवा शिबिर और शिक्षापत्री वक्तृत्व की प्रतिस्पर्धा की गयी। इस में माणसा के चारो तरफ से २०० जितने बालक, युवा, शिक्षापत्री के वक्तृत्व स्पर्धा में भाग लिये थे। यह एक उत्तम उदाहरण था।

इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर से संत पधारे थे। पूरे आयोजन में सक्रिय सेवा प.भ. विपुलभाई चौधरी (बापुपुरा) और प्रो. प्रवीणभाई चौधरी की प्रेरणारुपी सेवा रही थी। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

सिद्धपुर खाण (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा समैया के उपलक्ष्य में की गयी सभाये

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आ शीर्वाद से तथा अडमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वा. सगु. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से स.गु. महंत शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी (सिद्धपुर-खाण) शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष की समैया के उपलक्ष्य में निम्न लिखित गाँवो में लगातार विचरण करके सत्संग सभा किये। हरिभक्त अपने समैया के बारे में समझाया था।

प्रांतिज-मोडासा देश : आकरुंद, देविया, मोयद, सायरा, धनसुरा, राणीपुरा, खेरोल, बामल (ढाकरोल)।

विहार गेरिता देश : विजापरु, वजापुर, भाणपुर, जेपुर, सांकापुरा, रणछोडपुरा।

खाण शिहोरी (राज.) देश : खाण गाँम, शिरोही।

सिद्धपुर ऊँझा देश : सिद्धपुर, ऊँझा, पंचवटी, चाणस्मा, पाटण, ऊझा। ब्राह्मण शेरी, मंडलोप आदि गाँवो में हरिभक्त सभा करके कथा वार्ता का लाभ दिये। (महंत शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी - सिद्धपुर-खाण)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (इडर प्रदेश) समैया और जेतलपुर द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में की गयी गतिविधियाँ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आ शीर्वाद से स.गु. कोठारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा पूजारी स्वा. बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा द्वारा शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष की समैया और जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक आयोजन में से २२-६-२०२५ एकादशी लालोडाधाम से ईडरधाम श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन के किये पदयात्रा की गयी थी। जिस में अधिक हरिभक्तो ने लाभ लिया था। ता. ६-७-२०२५ एकादशी के दिन लालोडाधाम से जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन हेतु बाइक रैली में २०० हरिभक्त जुडे थे। एक घंटे तक महामंत्र की धुन की गयी थी। यहाँ के संत मंडल ने अच्छे से सत्संग द्वारा हरिभक्तो को समैया का मार्गदर्शन दिये थे। (शा. स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी - लालोडाधाम)

सत्संग समाचार

विश्व का सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

विश्व का सर्व प्रथम महामंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणधेव के शुभ सानिध्य में अषाढ सुद-१५ ता. १०-७-२०२५ को गुरुवार के दिन गुरु पूर्णिमा महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया।

सर्व प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का मुख्य प्रवेश द्वार पर आने से पू. महंत स्वामी, हजारो संत-हरिभक्तोने उल्लासपूर्वक स्वागत समैया करके धर्मवंशी का स्वागत किये। परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का श्रृंगार आरती करके देव का दर्शन करके अहमदाबाद मंदिर द्वारा संत-हरिभक्तो के सुदंर प्रयास से निज मंदिर के पीठे सुंदर अलौकिक हीरे का कलात्मक हिंडोला का उद्घाटन करके हरिभक्तो को सुलभ रहे। उसके लिये भोजनालय में जाने वाला सभा मंडप के नीचे सुंदर प्रवेश द्वार बनाया गया था। इसके बाद सभा में विराजमान हुए ते। अपने स्वामिनारायण मंदिर के संस्कृत महाविद्यालय के विद्वान बटुको द्वारा संस्कृत में स्वस्ति वाचन किया गया था। इसके बाद यजमान परिवार तथा संतो ने धर्मवंशी की आरती उतारे थे। प्रसंगोचित सभा में पू. स.गु.शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पू. स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) और पू. स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी ने सभी संतो द्वारा प.पू. महाराजश्री को शुभेच्छा दिये थे। और आगामी अपने उत्सव समैया, जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव, आचार्य स्थापना महोत्सव, बद्रीनारायणधाम मूर्ति प्रतिष्ठा आदि अपने विविध महोत्सव तथा देश-विदेश में कैनेडा, आस्ट्रेलिया, छपैयाधाम, न्यु निकोल, कुडासण, कालुपुर मंदिर, दहेगाम, भाभर, शांतिग्राम, शीलज के करोडो के महा मंदिरो के प्रोजेक्ट की जानकारी दी गयी। पू. राम स्वामीने सभापति का पद अच्छे से सम्भाले थे। पू. मुनि स्वामी की तारीफ करना चाहिए। वे कई प्रकार के श्रृंगारवैलेटर युवक मंडल, पार्किग, प्रसाद, भोजन में पू. भंडारी स्वामी, बालु स्वामी, दिव्यस्वरुप स्वामी आदि सेवा संत-हरिभक्तो ने निष्ठा से दी थी। हजारो की संख्या में हरिभक्त उपस्थिति के बाद अच्छी व्यवस्था की गयी थी। यह नरनारायणदेव की असीम कृपा है। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सभा में चिठ्ठी लिखकर सभी बहनो की हरिभक्तो की प्रशंसा की थी।

गुरुपूर्णिमा के सेवा भावी यजमान : प.भ. शालिन अरविंदभाई दोंगा परिवार अहमदाबाद था। प.भ. प्रवीणभाई नटवरभाई पटेल परिवार (सेडवावाले)। प.भ. परसोतमदास त्रिभोवनदास पटेल परिवार (भाउपुरा), प.भ. चंद्रकांतभाई दारजीभाई पटेल परिवार (कलापी गृप वस्त्राल), प.भ. रणछोडभाई विठ्ठलभाई पटेल परिवार (भगत) (गांधीनगर), अ.नि. शंकरलाल नारणदास पटेल परिवार (कोठावाला) - ह. प.भ. अक्षर चंद्रकांतभाई पटेल (राणीप), प.भ. घनश्यामभाई कुबेरदास पटेल परिवार (विहारवाले) - ह. समीर घनश्यामभाई पटेल, अ.नि. भक्तिभाई आत्मारामभाई पटेल परिवार (डांगरवावाले) - ह. प.भ. नरेन्द्रभाई, श्री श्रेणिकभाई, अ.नि. श्री कमलेशभाई (राणीप)।

सभी यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन, अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद दिये थे। आज की सुंदर कथा पू. महंत स्वामी के शिष्य स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी किये थे।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने खूब समझाकर बोले कि देव की निष्ठा-धर्मादा करने को सलाह दिये। हवेली में भी अ.सौ.प.पू. गादीवालाश्रीने दर्शन-आशीर्वाद के लिये अधिक संख्या में बहने आयी थी।

हरिभक्त अनुशासनबद्ध रुप से धर्मवंशी का दर्शन करके धन्य हुए। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को विल्सडन मंदिर के स्वर्ण जयंती के महोत्सव में जाने के कारण लाखो हरिभक्तो को दर्शन देकर नरनारायणदेव का दर्शन पूर्ण करके रात्रि में संत पार्षद मंडल के साथ लंडन गये थे। (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर अहमदाबाद वार्षिक पाटोत्सव को मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा काकरिया रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर के युवा उत्साही महंत स.गु.शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर के वार्षिक पाटोत्सव ता. २३-७-२०२५ अषाढ वद-१४ के दिन स्थानिक हरिभक्त-कोठारीश्री मुकेशभाई आदि हरिभक्तो के सुंदर प्रयास से उल्लासपूर्वक मनाया गया था। इस अवसर पर कांकरिया मंदिर से पू. स.गु.

महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), स.गु. महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (कांकरिया) और स.गु. शा.स्वा. आनंदजीवनदासजी रात्रि में ९-३० से ११-३० बजे तक कथा वार्ता करके श्रीहरि भगवान के लीला चरित्र की बाते, आने वाले महामहोत्सव समैया के विषय में अनेक कार्यक्रमो से अवगत किये थे । साथ ही साथ शिक्षापत्री के महाराज ने पंचदेव की पूजा करने की आज्ञा दिये है । उसका महात्म संतो को बताया । इस अवसर पर कांकरिया श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और यहाँ के हरिभक्तो ने महामंत्र धून गाये थे । पू. महंत शा. स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी ने ठाकुरजी की अन्नकूट आरती करके हरिभक्तो को दर्शन का अलौकिक लाभ दिये थे । (कोठारीश्री गोमतीपुर मंदिर)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में करशनपुरा (जि. मेहसाणा) गाँव में २०० घंटे की अखंड धुन

जेतलपुरधाम निवासी परमकृपालु संकल्प सिद्ध श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. महंत स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से करशनपुरा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में जेतलपुरधाम द्विशताब्दी के उपलक्ष्य में २०० घंटे की महामंत्र धून का सुंदर प्रबंध किया गया था । धुन की पूर्णाहुति के अवसर पर ता. ११-७-२०२५ के दिन को जेतलपुरधाम से स.गु. महंत स्वामी, कृष्णप्रकाशदासजी, मेहसाणा से स.गु. स्वा. नारायणप्रसाददासजी, महंत स.गु. शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा-मेहसाणा), ब्र. शा. स्वा., हरिस्वरुपदासजी (कालुपुर ट्रस्टीश्री), शा. जनमंगल स्वामी आदि संत मंडल ने ठाकुरजी की आरती कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे । (शा. जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में जोशीपुरा (खाखरिया) गाँव में २०० घंटे की अखंड धुन

जेतलपुरधाम निवासी परमकृपालु संकल्प सिद्ध श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. महंत स.गु.शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से जोशीपुरा (खाखरिया) गाँव में २०० घंटे की अखंड धुन का प्रबंध किया गया था । ता. ६-६-२०२५ को धुन की पूर्णाहुति के समय मेहसाणा से स्वा. नारायणप्रसाददासजी, सगु. महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (मेहसाणा-नारणपुरा), महंत स.गु. शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी (जयपुर) और शा. स्वा. अखंडस्वरुपदासजी आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता धुन की पूर्णाहुति आरती उतारे थे । (शा. जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीता दरवाजा) का १६१ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा में (सीता दरवाजा) में विराजमान ठाकुरजी का १६१ वाँ पाटोत्सव ता. ३-७-२०२५ के दिन विधिवत मनाया गया था । इस अवसर पर मूलीधाम के रणजीत मंदिर में रहते संतो ने ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर कथा कहे थे । अहमदाबाद मे प्लेन क्रेश में मृत्यु प्राप्त आत्मा की शांति के लिये ४ घंटे का महामंत्र धुन किये थे । (प्रति अनिल दूदरेजिया - ध्रांगध्रा)

हलवद प्रसादी मंदिर और चराडवा मंदिर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव मनाना

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली प्रदेश के अपने हलवद (प्रसादी मंदिर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा ता. १०-७-२५ के दिन स.गु.शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी तथा हलवद के सभी हरिभक्त सभा में अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री नरनाराणदेव देश के सर्व आश्रित मात्र गुरु स्थान पर विराजकर अपने भक्तो को कैसे खुश और सम्पन्न करे । सत्संगि मात्र का पोषण कर रहे है । ऐसा कहकर धर्मकुल के स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के शब्दो में महात्म कहे थे ।

इसी प्रकार चराडवा मंदिर में वहाँ के महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी सभा को सभी हरिभक्तो के साथ गुरु पूजन अर्चन करके धर्मवंशी की महिमा महात्म कहे थे । (प्रति. अनिल दूधरेजिया)

संवत २०८१-८२ वर्ष के वर्षाऋतु में गाँवो (देश) में कथा करने गये संतो की सूची

देश का नाम	मंडलधारी का नाम
अमदावाद शहेर चोर्यासी	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु स्वामी देवकृष्णदासजी (कालुपुर)
कणभा	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
बालासिनोर	स.गु. शास्त्री स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (कालुपुर)
आंतरोली	स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा)
लुणावाडा	स.गु. स्वामी आनंदस्वरूपदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी (पोरडा)
मारूसणा-कटोसणा	स.गु. स्वामी अजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (धोलका)
ट्रेन्ट सीतापुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारणवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर)
कपडवंज	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
विहार-गेरीता	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
वडुं-डांगरवा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (कलोल)
बालवा	स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (उनावा)
भात-कासीन्द्रा	स.गु. शास्त्री स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बोपल)
विरमगाम	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
लांघणज	स.गु. शास्त्री स्वामी सचिदानंदजी गुरु शा. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (मूली)
मोरवासण	स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिगोविंददासजी (कलोल)
उंझा (सिध्धपुर)	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
बनासकांठा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कोटा)
पोर-वावोल	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
धमासणा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (बापुनगर)
प्रांतिज-मोडासा	स.गु. स्वामी गोपालस्वरूपदासजी गुरु शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी
साणंद-गोधावी	स.गु. शास्त्री स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बोपल)
शिरोही	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
सादरा-वासणा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (बापुनगर)
कुडाल-राजपुर	स.गु. महंत स्वामी सद्‌गुणदासजी (हिंमतनगर)
संतरामपुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा)
नलकंठा	कोठार हस्तक
खारवरीया	स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी श्रीहरिदासजी

नोट : इस देश में किसी नये गाँव को जोडना हो तो बालु स्वामी से सम्पर्क करे ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

वैशाख सुद-१ प.भ. मूलजी हिरजी केरा (मांडवी-कच्छ), प.भ. धनजीभाई नाथाभाई पटेल (सुरत) । **वैशाख सुद-२** प.भ. प्रतिक नरेन्द्रभाई ठक्कर (अहमदाबाद), अ.नि. स.गु. स्वा. हरिकेशवदासजी (बामरोली मंदिर -एम.पी.) । **वैशाख सुद-३** स.गु. स्वा. प्रभुचरणदासजी (वेडरोड सुरत स्वा. मंदिर), स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजी (पोरडा), प.भ. केसरा धनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. चिमनभाई केशवलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई सोडाभाई गोहील (भावनगर) । **वैशाख सुद-४** प.भ. डॉ. हरिकृष्णभाई गोकलभाई पटेल (सापावाडा), प.भ. किरण धीरज पिंडोरीया (मुंबई), आध्या वुमन होस्पिटल (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-५** प.भ. जैमिनकुमार भरतभाई चौधरी (माणेकपुर) । **वैशाख सुद-६** प.भ. खेमजीभाई रामजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **वैशाख सुद-७** प.भ. निलयुकमार महेशकुमार मीस्त्री (हालोल), प.भ. श्रीधर अविनाशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. आरना कुनलकुमार पटेल (धमासणा), प.भ. राजेशभाई मनुभाई पांभर (बोपल) । **वैशाख सुद-८** प.भ. केसरबेन विसराम पिंडोरीया (मांडवी-कच्छ) । **वैशाख सुद-९** प.भ. उजास महेन्द्रभाई पटेल (मुंबई), प.भ. दिनेशभाई धनजीभाई वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. रमणभाई चुनीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अर्थ कौशिककुमार अरविंदभाई पटेल (उनावा), प.भ.अ.नि. पुरबाई वाघजी केराई (कोडकी-कच्छ) । **वैशाख सुद-१०** प.भ. जीतेश कानजी वरसाणी (भारासर-कच्छ), प.भ. सुरेशभाई भक्तिदास पटेल (राणीप) । **वैशाख सुद-११** प.भ.अ.नि. कुरजी करशन वरसाणी (भारासर-कच्छ) । **वैशाख सुद-१२** प.भ.अ.नि विश्राम देवजी पिंडोरीया (सरली-कच्छ), प.भ. प्रविणभाई (सेडलावाला-अहमदाबाद), श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंगे (भायला), प.भ. कांताबेन वालजीभाई हिराणी (मदनपुर-कच्छ), प.भ.अ.नि. वाघजी मनजी वेकरीया (कच्छ), प.भ. मंजुलाबेन विक्रमभाई (झुंडाल), प.भ. मयंक कामदार (पोरबंदर-लीलानंद मेग्नेशीयर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ) । **वैशाख सुद-१३** प.भ. रामबाई नारण हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. नारणभाई छगनभाई पटेल (गोठीब) । **वैशाख सुद-१४** प.भ. विष्णुभाई हरगोविंददास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कौशिकभाई डाह्याभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अभिषेक जसवंतभाई पटेल (सुरज), प.भ. नीतिनभाई कांतिलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. चेहरबेन दलसंगभाई चौधरी (भीमपुरा) । **वैशाख सुद-१५** प.भ. रामचंद्र चिमनलाल पटेल.

वैशाख वद-१ प.भ. लक्ष्मणभाई कामाभाई चौधरी (मातापुरा-छाला) । **वैशाख वद-२** प.भ. मंजुबाई मनजी खेताणी (मदनपुर-कच्छ), प.भ. अरविंदभाई शीवाभाई अगोला (अहमदाबाद), प.भ. रोहितकुमार माणेकलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अतुलभाई बी. शुकला (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-३** प.भ. नीताबेन घनश्यामभाई पटेल (उनावा), प.भ. घनश्यामभाई शंकरदास पटेल (मोखासण) । **वैशाख वद-४** प.भ.अ.नि. परसोतमभाई नारणभाई पटेल (चेनपुर), प.भ. बाबुलाल मथुरदास पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जीवीबाई कानजी केराई (कच्छ) । **वैशाख वद-५** प.भ.अ.नि. कानबाई विश्राम गांगजीयाणी (दहींसरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. रवजी कानजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. मित कल्पेश डाह्यालाल भावसार (गांधीनगर) । **वैशाख वद-६** प.भ. भौमिक नाथाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. सुरेशभाई माधाभाई देसाई (अहमदाबाद), स.गु. स्वा. श्रीप्रकाशदासजी गुरु स्वा. घनश्यामदासजी (कालुपुर मंदिर), प.भ. किशोरभाई शाह (वडताल), प.भ. मौलिनभाई (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. प्रविणचंद्र चतुरदास सोनी (नारणपुरा), प.भ. नरसिंहभाई नथुभाई टीलवा (वंथली) । **वैशाख वद-६/७** प.भ.अ.नि. रमण भगत (पलसाणा) । **वैशाख वद-८** प.भ. पार्थ अश्विनभाई ढांकेचा (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-९** अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी श्रीकृष्णदासजी (भचाउ-कच्छ) । **वैशाख वद-१०** प.भ. मनीषाबेन लालजी पिंडोरीया (गोधरा-कच्छ) । **वैशाख वद-११** श्री नरनारायणदेव की खुशी के लिये (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-१२** प.भ. रमेशभाई एन. पूजारा (अहमदाबाद), प.भ. नरहरिभाई एम. त्रिवेदी (नारणपुरा), प.भ.अ.नि. मुक्ताबेन आर. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. वेलजीभाई प्रेमजी वरसाणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. मनीषभाई देवचंदभाई पटेल (लालोडा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. जयंतीभाई ननुभाई सुहागीया (पीठवडी), प.भ. रतनबेन नानजीभाई हिराणी (सुखपररोहा-कच्छ), प.भ. नानजीभाई रामजीभाई हिराणी, प.भ. कमलेशभाई पटेल (सलाल), प.भ.अ.नि. दिवालीबा वल्लभभाई नसीत (अहमदाबाद), प.भ. साहिलभाई हितेषभाई सोनी (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-१३** प.भ. मौलिक प्रफुलभाई पटेल (बुवा-भरूच), प.भ. कनुभाई भवानभाई सोरठीया (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. संगीताबेन सुरेशभाई पटेल (धमासणा), प.भ. मधुसुदनभाई रतीलाल पूजारा (अहमदाबाद) । **वैशाख वद-१४** प.भ.अ.नि. कानबाई विरजी हिराणी (मांडवी-कच्छ), प.भ. प्रविण करशन राबडीया (रामपरवेकरा-कच्छ) । **वैशाख वद-३०/१** विवान आर्ट (सुरत), प.भ. तेजस देवेन्द्रभाई पटेल (नागपुर-महाराष्ट्र)

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

समैया के उपलक्ष्य में कालुपुर मंदिर में अपने करकमलो द्वारा तुलसी के पौधे का वितरण करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री नरनारायणदेव के समक्ष खजूर का अन्नकूट ।

अहमदाबाद मंदिर में भव्य हीर का हिंडोला - प्रदर्शन का उद्घाटन करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

असारवा सहजानंद गुरुकुल वीर हनुमानजी के पास शिवलिंग की प्राणप्रतिष्ठा करते प.पू. महाराजश्री ।

समैया के अवसर पर अपने कालुपुर मंदिर द्वारा निर्माणाधीन निकोल मंदिर में वोटरकूलर रखा गया ।

समैया के अवसर पर माणसा में संतो के सानिध्य में बाल-युवा शिबिर तथा धार्मिक शिक्षण प्रतियोगिता ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

पेनासीलवेनिया (अमेरिका) में युवा कैम्प में युवको के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री।

समैया के अवसर पर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महारजाश्री के आज्ञा से

२१२ घंटे

२१२ गाँव में हरिभक्तो द्वारा
श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून

प्रारंभ	पूर्णाहुति
श्रावण वद-७ ता. १५-८-२०२५	भाद्रसुद-१ ता. २४-८-२०२५
शुक्रवार प्रातः ८-३०	रविवार प्रात ८-३०

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में
विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद ॐ

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष का

समैया

23-1-2026 - 27-1-2026

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

स्थल :-
"पर्व" ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के बागल में,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद।

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद ॐ

विश्व का सर्व प्रथम
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में

समैया के अवसर पर

भव्य ... प्रदर्शन

ता. १२-७-२५ से २३-८-२५